जे.टी.डी.सी.एल. द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पर्यटन पत्रिका

जोहार झारखण्ड

प्रकृति का छुपा गहना...

अंक द्वितीय (अक्टूबर-दिसम्बर, 2018)

झारखण्ड के त्योहार

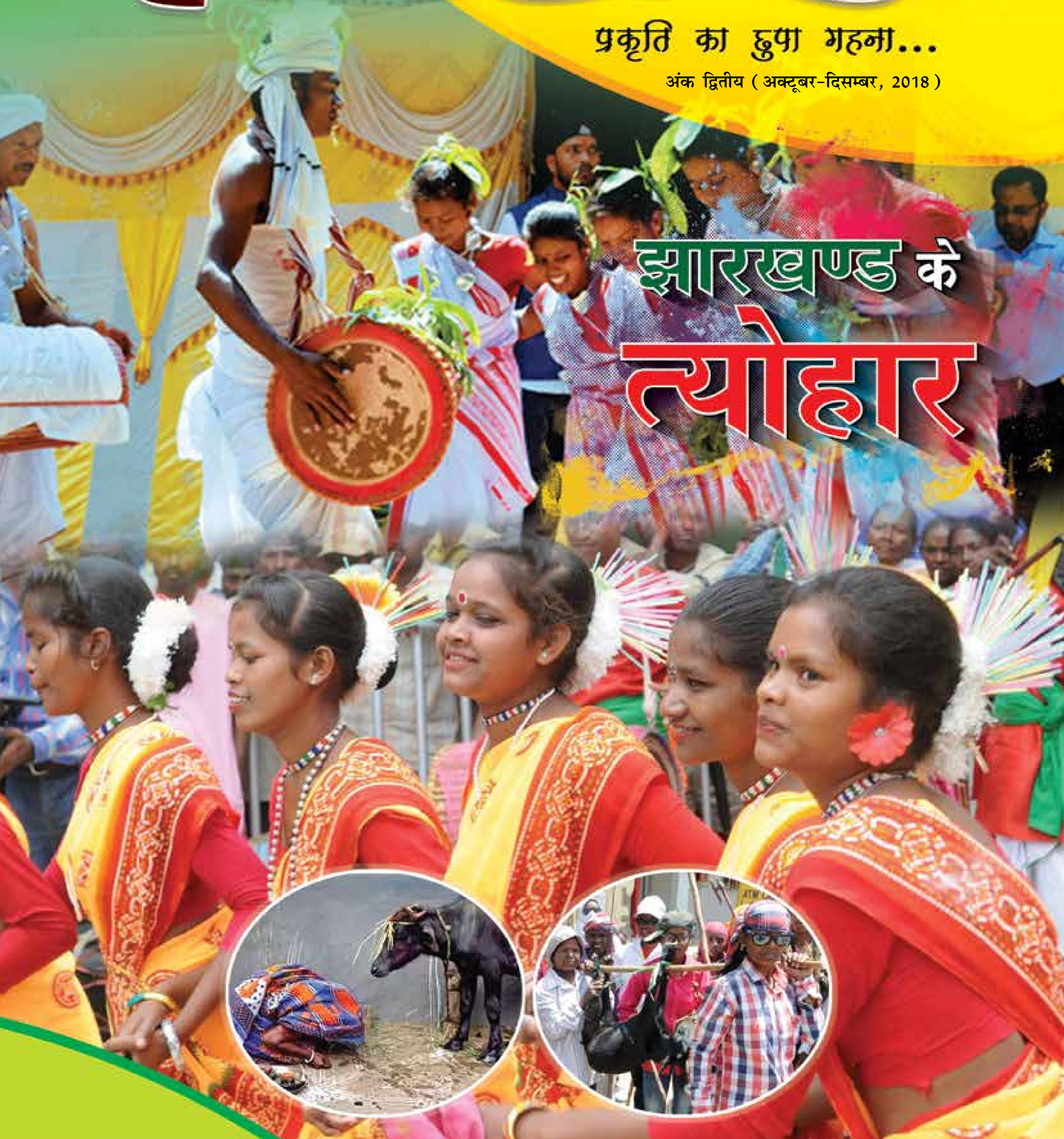

jharkhand tourism
Nature's hidden jewel

Jharkhand Tourism Development Corporation
JTDC

Nature's HIDDEN JEWEL

JHARKHAND – A NEW EXPERIENCE

Jharkhand is a state in eastern India. It was carved out of the southern part of Bihar on 15 November 2000. Jharkhand shares its border with the state of Bihar to the north, Uttar Pradesh and Chhattisgarh to the west, Orrisa to the south, and West Bengal to the east. It has an area of 79,714 km. The industrial city of Ranchi is its capital and Dumka is sub capital while Jamshedpur is the largest and the biggest industrial city of the state.

GOVERNMENT OF JHARKHAND DEPARTMENT OF TOURISM

M.D.I. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi 834004
Secretary Ph. : 0651-2400981, Fax : 0651-2400982, Email : govjharkhandtourism@gmail.com
Director Ph. : 0651-2400493, Fax : 2400492, Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
JTDC Email Id : jtdcltd@gmail.com, Website : www.jharkhandtourism.gov.in
www.facebook.com/jharkhandtourismdepartment, Twitter : https://twitter.com/visitjharkhand,
YouTube : https://m.youtube.com/channel/UCKDHUzseKwkESQLzOliVOA

सम्पादकीय

हर राज्य की अपनी संस्कृति, परंपरा और त्योहार होते हैं। यह देशभर में मनाए जाने वाले राष्ट्रीय त्योहारों से पूरी तरह भिन्न होते हैं। राज्य स्तर पर मनाए जाने वाले इन पर्वों की अलग कहानी होती है। मनाने का ढंग भी अन्य से अलग होता है। झारखण्ड के भी कुछ अपने त्योहार हैं। ऐसे पर्वों में सरहुल, करमा, सोहराय, जनी शिकार आदि शामिल हैं। सरहुल जहां गौरवशाली प्राकृतिक धरोहर का नाम है, वहीं सोहराय पालतू जानवरों के प्रति समर्पण और लगाव का। करमा भाई–बहन के आपसी प्रेम को दर्शाता है। आदिवासी युवतियां अपने भाइयों की सलामती के लिए इस दिन व्रत रखती हैं। लगभग एक महीने तक चलने वाले टुसू पर्व की अलग कथा है। भगता परब पर भक्ति में लीन भक्त, कई हैरतअंगेज करतब दिखाते हैं। जनी शिकार में महिलाएं पुरुषों का वेश धारण कर परंपरागत हथियारों के साथ समूह में निकलती हैं। इस क्रम में आसपास मिलने वाले जानवरों का शिकार करती हैं। इस बार के अंक की आवरण कथा राज्य के त्योहारों पर ही केंद्रित है। इसके अलावा नियमित स्तंभ पूर्व की तरह ही हैं। इसमें पर्यटन विभाग की गतिविधियों, सोशल मीडिया पर हो रहे कार्यकलापों को जगह दी गई है। इस अंक में देश के एक पर्यटन स्थल को भी रखा गया है। उम्मीद करता हूं कि पहले के अंकों की तरह यह अंक भी आपको जरूर पसंद आएगा।

- संजीव कुमार बेसरा
भा.प्र.से.

संरक्षक
राहूल शर्मा (भा.प्र.से.)
सचिव, पर्यटन, कला–संस्कृति,
खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग, झारखण्ड

प्रधान सम्पादक
संजीव कुमार बेसरा (भा.प्र.से.)
निदेशक पर्यटन एवं एम.डी.
जे.टी.डी.सी.एल.

सम्पादक
राजीव रंजन
महाप्रबंधक, जे.टी.डी.सी.एल.

सम्पादकीय सलाहकार
अमित गुप्ता

सह–सम्पादकीय सलाहकार
कुमार राजेश

आलोक प्रसाद, डी.जी.एम.,
झारखण्ड पर्यटन विकास निगम लिमिटेड, रांची द्वारा प्रकाशित

विषय सूची

3 समाचार सार

5 आवरण कथा

सरहुल
करमा
दशाइन
जावा
टुसू
हैल पूंहया
भोक्ता परब
वंदना कार्तिक
जनी शिकार
छठ पर्व
सोहराय

19 यात्रा वृतांत

21 प्रमुख पर्यटन स्थल (भारत/दुनिया)

25 झारखण्ड के व्यंजन

27 सोशल मीडिया से

समाचार सार

पर्यटन पखवाड़ा पर हुए कई कार्यक्रम

विश्व पर्यटन दिवस पर झारखण्ड के विभिन्न जिलों में 16 से 27 सितंबर तक पर्यटन पखवाड़ा का आयोजन किया गया। राजधानी रांची के बिरसा बिहार होटल में कार्यक्रम हुआ। मुख्य अतिथि पर्यटन मंत्री अमर कुमार बाउरी थे। उन्होंने कहा कि झारखण्ड पर्यटन के क्षेत्र में अन्य राज्यों के मुकाबले बेहतर है। यहां हिन्दू, बौद्ध, जैन हर तरह के लोगों के लिए पर्यटन क्षेत्र हैं। धार्मिक, प्राकृतिक, फॉल, नदी, जंगल, माइनिंग टूरिज्म आदि हैं। यहां के सभी पर्यटन स्थल सुरक्षित हो गए हैं। सरकार ने पर्यटन नीति बनाकर इसे और आगे बढ़ाने का काम किया है। अब झारखण्ड के स्थानीय युवाओं को पर्यटन क्षेत्र में रोजगार भी मिल रहा है। उन्हें पर्यटन मित्र बनाया गया है। हर जगह पर वे पर्यटकों को बेहतर सेवाएं दे रहे हैं।

कार्यक्रम में पर्यटन सचिव डॉ मनीष रंजन ने बताया कि जल्द ही पर्यटन की वेबसाईट पर क्विज आयोजित की जायेगी। उन्होंने कहा कि पर्यटन पर्व का इस वर्ष का थीम है 'देखो अपना देश'। इस कार्यक्रम के तहत विभाग की मंशा है कि स्थानीय लोगों के साथ देश के अन्य लोगों को भी झारखण्ड के पर्यटन स्थल, कला संस्कृति, यहां के व्यंजन आदि की जानकारी मिल सके। अधिक से अधिक संख्या में पर्यटक झारखण्ड आएं। पर्यटन निदेशक संजीव कुमार बेसरा ने कहा कि पर्यटन पखवाड़ा का उद्देश्य पर्यटन को बढ़ावा देना है। इसके लिए सरकार के स्तर पर योजनाएं तैयार की गई हैं। विभाग काम को तेजी से बढ़ा रहा है।

पर्यटन स्थलों पर सड़कों का बिछेगा जाल

झारखण्ड में पर्यटन स्थलों के लिए 1070 करोड़ की लागत से 15 सड़कें बनाई जाएंगी। राज्य कैबिनेट ने इसकी मंजूरी दे दी है। इसके बन जाने से इन पर्यटन स्थलों पर आने–जाने में पर्यटकों को काफी सहूलियत होगी। रजरप्पा में दामोदर नदी पर पैदल पुल और भैरवी नदी पर उच्चस्तरीय पुल का निर्माण भी किया जाएगा। कैबिनेट के निर्णय के अनुसार खूंटी और रांची में आम्रेश्वरधाम से तुपुदाना तक 36.326 किलोमीटर सड़क बनेगी। रामगढ़ में चितरपुर से सांडी होकर रजरप्पा फोर लेन रोड बनाया जाएगा। इसकी लंबाई 10.139 किलोमीटर होगी। बड़कीपोना से कुल्ही तक 13.8 किलोमीटर और सिमडेगा में जोराम से सारंगबेड़ा तक 8.10 किलोमीटर सड़क बनेगी। देवघर में पिछड़ीबाद से देवसंग मोड़ तक 16.07 किलोमीटर, शहरजोरी मोड़ से करौं तक 26.2 किलोमीटर तक रोड बनेगा। पलामू में ब्रहमोरिया मोड़ से रेहला 16.8 किलोमीटर, सतबरवा से पांकी 11.6 किलोमीटर और कोडरमा में डोमचांच से फगुनी तक 21.5 किलोमीटर सड़क बनाई जाएगी।

गिरिडीह में बलहारा से खोरदा तक 34.7 किलोमीटर और पटना से गांवा लिंक पथ 38.9 किलोमीटर, मंझारी मोड़ से चियांकी 14 किलोमीटर, मनोहरपुर चाईबासा में उंधन से धनपाली तक 10.8 किलोमीटर तक, गढ़वा में वंशीधर मंदिर से गरदा 15.5 तक किलोमीटर और लातेहार में बालूमाथ से उदयपुरा तक 36.9 किलोमीटर तक सड़क बनाई जाएगी।

बेतला नेशनल पार्क में तीन नये मेहमान आए

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकार लगातार काम कर रही है। इसके मद्देनजर कर्नाटक से लातेहार बेतला नेशनल पार्क में तीन हाथी मंगाए गए हैं। पर्यटक फिर से हाथी की सवारी कर सकेंगे। हाथी की सवारी का मौका मिलने से पर्यटक काफी खुश हैं। आगे और हाथियों को प्रशिक्षित कर पांच और हाथी लाए जाने हैं। पहले पर्यटक हाथी की सवारी करते थे। अनारकली हाथी की मौत के बाद इसे बंद कर दिया गया था। यह पार्क 50 किलोमीटर तक फैला हुआ है।

पर्यटन विकास के लिए 52 करोड़ मंजूर

झारखण्ड में नेतरहाट, बेतला, दलमा और मुरसेना में पर्यटन के विकास के लिए केंद्र सरकार ने 52 करोड़ रुपए से अधिक की योजना की मंजूरी दी है। राज्य में इन स्थानों पर पारिस्थितकीय पर्यटन के विकास के लिए 52.72 करोड़ रुपए की योजना को स्वीकृति प्रदान की है। देश में इको पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए बड़े पैमाने पर काम हो रहा है।

पर्यटन स्थलों को मिलेगी विश्वस्तरीय पहचान

राज्य के पर्यटन स्थलों को विश्वस्तरीय पहचान मिलेगी। सरकार इसके लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के पर्यटन स्थलों का संपूर्ण विकास करना सरकार की प्राथमिकता है। रजरप्पा, इटखोरी, पारसनाथ, अंजनीधाम, देवघर, बासुकीनाथ एवं मलूटी समेत राज्य के तमाम धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों को विश्वस्तरीय पहचान दिलाने के लिए सरकार प्रयास कर रही है। इन पर्यटन क्षेत्रों के विकसित होने से राज्य और देश के आर्थिक विकास में गति आएगी। विदेशी पर्यटक झारखण्ड आएंगे। इससे राज्य में रोजगार का सृजन होगा। साथ ही, विदेशी मुद्रा भी देश में आएंगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने पर्यटन क्षेत्रों के विकास पर बल दिया है। उम्मीद है कि आने वाले दो–तीन वर्षों में विदेशी पर्यटक झारखण्ड के पर्यटन स्थलों में बड़ी संख्या में आएंगे।

पारसनाथ पहाड़ी के समग्र पर्यटकीय विकास की योजना

गिरिडीह स्थित पारसनाथ पहाड़ी के समग्र पर्यटकीय विकास की योजना है। सरकार ने इसकी रणनीति बनाई है। मुख्यमंत्री रघुवर दास ने तय समय में यह काम करने का निर्देश अधिकारियों को दिया है। पारसनाथ के दर्शन के लिए पर्यटक या श्रद्धालुओं के मधुबन से पैदल और डोली के माध्यम से जाने की योजना लागू कर दी गई है। मोटर साइकिल या अन्य वाहनों से दर्शन के लिए ऊपर जाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। वृद्ध और दिव्यांग श्रद्धालुओं को अत्यंत विशेष परिस्थिति में ही जिला प्रशासन वाहन के उपयोग की अनुमति दे रहा है। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया है कि जनजातीय संस्कृति के संवर्धन और विकास के लिए मरांगबुरू का मंदिर भी पर्यटन प्लान के तहत बनाया जाए। पर्यटकों से जुड़ी स्थानीय लोगों की जीविका का खास ध्यान रखने को कहा गया है। मुख्यमंत्री के मुताबिक पारसनाथ पहाड़ी की नैसर्गिकता और वन्य पशुओं सहित समस्त जैवविविधता सहित तमाम जल स्रोतों का संरक्षण करते हुए पर्यटन की दृष्टि से विकास होगा।

नेतरहाट में शरद महोत्सव

देशभर के पर्यटकों के बीच नेतरहाट की प्रसिद्धि है। यहां शरद महोत्सव का आयोजन किया गया। पर्यटकों के लिए टेंट सिटी बनायी गई। उत्सव में हर दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। पर्यटकों ने झारखण्ड के जायके का स्वाद भी चखा। इस बार के उत्सव में रॉक क्लाइम्बिंग, वाटर स्पोर्ट्स, रोप क्लाइम्बिंग बाइसिकल टूरिज्म आदि का आयोजन भी किया गया।

झारखण्ड के त्योहार

झारखण्ड में कई तरह के त्योहार मनाये जाते हैं। इनमें अधिकतर प्रकृति से जुड़े हैं। कुछ पर्व भाई-बहन के रिश्तों को दर्शाते हैं, तो कुछ पशु प्रेम को। प्रस्तुत है इन त्योहारों को लेकर यह रिपोर्ट :-

गौरवशाली प्राकृतिक धरोहर है

सरहुल

सरहुल झारखण्ड के प्रमुख पर्व में एक है। यह आदिवासियों का भव्य उत्सव है। यह पर्व चैत्र शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है। मूलतः यह प्रकृति की आराधना का पर्व है। आदिवासियों में ऐसी मान्यता है कि इस पर्व के बाद से ही नई फसलों का उपयोग शुरू किया जाता है। सरहुल केवल एक पर्व नहीं है, बल्कि झारखण्ड की गौरवशाली प्राकृतिक धरोहर का नाम है। यही धरोहर मानव–सभ्यता, संस्कृति और पर्यावरण की रीढ़ भी है। यह एक ऐतिहासिक पर्व है और इसकी परंपराएं भिन्न हैं।

इस पर्व में गांव का पुजारी यानी पाहन सारी परंपराएं संपन्न कराते हैं। पर्व का उद्देश्य सृष्टि संबंध और उसमें आदिवासियों की भूमिका को प्रतीकात्मक पुनरावृत्ति के जरिये कायम रखना होता है। चैत्र कृष्ण पक्ष तृतीया तिथि से शुरू होकर दो माह तक चलनेवाला यह एक अद्भुत धार्मिक त्योहार है।

साल के वृक्ष में फूलों का आना इस त्योहार के आने का द्योतक है। संथाल और उरांवों द्वारा आयोजित इस पर्व में 'फूल गईल सारे फूल, सरहुल दिना आबे गुईया' जैसे गीतों की ताल पर प्रसिद्ध सरहुल नृत्य पर झूमते हुए प्रकृति से अपने जुड़ाव और आत्मीयता का परिचय देते हैं।

सरहुल पर्व को अलग–अलग समूहों में भिन्न–भिन्न नामों से जाना जाता है, जैसे– उरांव में खद्दी या खेखेल बेंजा, मुंडा में बापोरोब, खड़िया में जाड़कोर, हो–संताल में बाहा परब आदि। इसमें भरपूर उत्पादन की कामना के साथ हर बार प्रतीकात्मक रूप से सूर्य–आकाश के साथ धरती का विवाह संपन्न कराया जाता है। यही वह ऋतु है, जब प्रकृति के साथ–साथ समस्त जीव–जगत में नई ऊर्जा का संचार होता है।

स्थानीय लोगों के अनुसार पेड़ों की पूजा करने के बाद पाहन एक मुर्गी के सिर पर कुछ अनाज डालते हैं। ऐसा माना जाता

The hilly Netarhat

The Queen of Chhotanagpur is the most beautiful weekend getaway in Jharkhand.

NETARHAT, an Indian corruption of "nature's heart," was moniker given by homesick British soldiers of the Raj who were sent here. The dense wooded hills, the lush green valley, the sun rising from the Chotanagpur plateau and exploding in flames down the Vindhya-Satpura range are appreciated by nature-lovers.

WHAT TO SEE:

SUNRISE POINT: As the sun emerges from the careful silhouttes of yesterday's dark mountain, sunrise at Netarhat is a memorable rendezvous with nature. The strategic location of Netarhat provides spectacular views.

MAGNOLIA SUNSET POINT provides the perfect view to capture the sunset as well as the spectacular moonrise which is surreal, yet real.

GHAGHARI FALLS: While the Upper Ghaghari falls are set amind a lush valley, the Lower Ghaghari falls nestle in the quiet of a dense jungle.

GOVERNMENT OF JHARKHAND
DEPARTMENT OF TOURISM

M.D.I. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi 834004
Secretary Ph. : 0651-2400981, Fax : 0651-2400982, Email : govjharkhandtourism@gmail.com
Director Ph. : 0651-2400493, Fax : 2400492,
Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
JTDC Email Id : jtdcltd@gmail.com, Website : www.jharkhandtourism.gov.in
www.facebook.com/jharkhandtourismdepartment,
Twitter : https://twitter.com/visitjharkhand,
YouTube : https://m.youtube.com/channel/UCKDHUzseKwkESQLzOliVOA

है कि यदि भूमि पर गिरने के बाद मुर्गी चावल के दाने को खाती है, तो लोगों के लिए समृद्धि की भविष्यवाणी की जाती है। अगर मुर्गी नहीं खाती, तब आपदा समुदाय की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं। इसके अलावा आने वाले मौसम में पानी में टहनियों की एक जोड़ी देखते हुए वर्षा की भविष्यवाणी की जाती है। ये पुरानी परंपराएं हैं, जो पीढ़ियों से चली रही हैं।

झारखण्ड में जनजाति समुदाय इस उत्सव को उत्साह और आनंद के साथ मनाते हैं। जनजातीय पुरुष, महिला और बच्चे रंगीन और जातीय परिधान पहनते हैं। महिलाएं खास तौर पर लाल पार की साड़ी पहनती हैं। पारंपरिक नृत्य के साथ शोभा यात्रा निकाली जाती है।

सरहुल सामूहिक उत्सव का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है, जहां हर कोई प्रतिभागी है। हर धर्म जाति के लोग इस पर्व में शामिल होते हैं।

करमा पर भाई की सलामती की दुआ

करमा झारखण्ड के आदिवासियों के प्रमुख त्योहारों में एक है। मुख्य रूप से यह भादो (सामान्य तौर पर सितंबर) मास की एकादशी के दिन और कुछ स्थानों पर उसी के आसपास मनाया जाता है। इस मौके पर आदिवासी प्रकृति की पूजा कर अच्छी फसल की कामना करते हैं। साथ ही, बहनें अपने भाइयों की सलामती के लिए प्रार्थना करती हैं। करमा पर आदिवासी ढोल और मांदर की थाप पर झूमते–गाते हैं।

यह दिन इनके लिए प्रकृति की पूजा का है। सभी उल्लास से भरे होते हैं। परंपरा के मुताबिक खेतों में बोई गई फसलें बर्बाद न हों, इसलिए प्रकृति की पूजा की जाती है। इस मौके पर एक बर्तन में बालू भरकर उसे कलात्मक तरीके से सजाया जाता है। पर्व शुरू होने के कुछ दिनों पहले उसमें जौ डाल दिए जाते हैं। इसे 'जावा' कहा जाता है। यही जावा आदिवासी युवती और महिलाएं अपने बालों में लगाकर झूमती–नाचती हैं।

आदिवासी युवतियां अपने भाइयों की सलामती के लिए इस दिन व्रत रखती हैं। इनके भाई 'करम' वृक्ष की डाल लेकर घर के आंगन या खेतों में गाड़ते हैं। इसे वे प्रकृति के आराध्य देव मानकर पूजा करते हैं। पूजा समाप्त होने के बाद इस डाल को पूरे धार्मिक रीति से तालाब, पोखर, नदी आदि में विसर्जित किया जाता है।

jharkhand tourism
Nature's hidden jewel

Nature's HIDDEN JEWEL

GOVERNMENT OF JHARKHAND
DEPARTMENT OF TOURISM

M.D.I. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi 834004
Secretary Ph. : 0651-2400981, Fax : 0651-2400982,
Email : govjharkhandtourism@gmail.com
Director Ph. : 0651-2400493, Fax : 2400492,
Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
JTDC Email Id : jtdcltd@gmail.com,
Website : www.jharkhandtourism.gov.in
www.facebook.com/jharkhandtourismdepartment,
Twitter : https://twitter.com/visitjharkhand,
YouTube : https://m.youtube.com/channel/
UCKDHUzseKwkESQLzOliVOA

Jharkhand Tourism Development Corporation
JTDC

संथाल का बड़ा पर्व है दशाइन

दशाइन संथाल का बड़ा पर्व माना जाता है। यह दुर्गा पूजा की तरह 10 दिनों का आदिवासी त्योहार है। इस पर गांवों में मिट्टी के घरों के फर्श पर गोबर का एक ताजा लेप लगाया जाता है। घर की दीवारों पर पारंपरिक रूपांकनों के साथ चित्र बनाए जाते हैं। ऐसा देवी दुर्गा का स्वागत करने के लिए किया जाता है, ताकि दशा के दौरान वह महिषासुर का वध कर सकें।

संथालों के धार्मिक गुरु, कामरू या ठकरान पुरुषों की एक टीम बनाते हैं। वे महिषासुर या अनिष्ट शक्ति की खोज में आस–पास के गांवों में नृत्य करते हैं। जहर–एरा या देवी दुर्गा के दूत माने जाने वाले ठकरान खुद को मोर के पंखों से सजाते हैं। ढोल पीटते हैं। अपने समूह के साथ नाचते हुए लोगों से महिषासुर के बारे में पूछते हैं।

आदिवासी मान्यता के अनुसार जानकारी मिलने के बाद ठकरान देवी के स्थान पर जाकर उसे आमंत्रित करते हैं। इसे जाहर के नाम से जाना जाता है। वे महिषासुर के ठिकाने का खुलासा करते हैं। देवी दशमी के दिन राक्षस का वध करती हैं।

स्थानीय लोगों के अनुसार आम तौर पर घने कोहरे के बीच यह एकांत स्थान होता है। एक चट्टान को देवी के रूप में पूजा जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान रखने वाले ठकरान खुद को बुरी शक्ति से छुटकारा पाने के प्रतीक के रूप में देखते हैं। लोग नए कपड़े पहनते हैं। जो लोग नए कपड़े नहीं खरीद सकते, वे कम से कम साफ कपड़े जरूर पहनते हैं।

अविवाहित लड़कियों का त्योहार जावा

अविवाहित आदिवासी लड़कियां जावा त्योहार मनाती हैं। इसका अलग ही नाच और गाना होता है। यह त्योहार अच्छी प्रजनन क्षमता और बेहतर घर की उम्मीद के लिए मुख्य रूप से मनाया जाता है। अविवाहित लड़कियां उपजाऊ बीज के साथ एक छोटी टोकरी को सजाती हैं। माना जाता है कि यह अनाज के अच्छे अंकुरण होने पर प्रजनन क्षमता में वृद्धि लाती है। लड़कियां करम देवता को हरे खरबूजे की पेशकश करती हैं, जो 'बेटा' के प्रतीक के रूप में होता है। यह इंसान की आदिम उम्मीद (अनाज और बच्चों) को दर्शाता है। झारखण्ड का पूरा आदिवासी इलाका इस दौरान अपने ही धुन में होता है।

एक महीने तक चलता है टुसू

टुसू झारखण्ड के आदिवासियों का महत्वपूर्ण पर्व है। यह जाड़ों में फसल कटने के बाद 15 दिसंबर से लेकर मकर संक्राति तक मनाया जाता है। टुसू का शाब्दिक अर्थ 'कुंवारी' है। वैसे तो झारखण्ड के सभी पर्व–त्योहार प्रकृति से जुड़े हुए हैं, लेकिन टुसू का महत्व कुछ और ही है। यह पर्व झारखण्ड के अलावा पश्चिम बंगाल के पुरुलिया, मिदनापुर और बांकुड़ा जिलों, ओड़िशा के क्योंझर, मयूरभंज, बारीपदा जिलों में मनाया जाता है। अगहन संक्रांति (15 दिसंबर) से लेकर मकर संक्रांति (14 जनवरी) तक इसे कुंवारी कन्याओं द्वारा टुसू पूजन के रूप में मनाया जाता है। घर की कुंवारी कन्याएं प्रतिदिन संध्या समय में टुसू की पूजा करती हैं।

अगहन संक्रांति के दिन गांव की कुंवारी कन्याएं टुसू की मूर्ति बनाती हैं। मूर्ति के चारों ओर सजावट करती हैं। फिर धूप, दीप के साथ टुसू की पूजा करती हैं। टुसू पर्व को नारी सम्मान के रूप में भी मनाया जाता है। लगभग एक माह तक चलने वाले इस पर्व के दौरान कुंवारी कन्याओं की भूमिका सबसे अधिक होती है। कुंवारी कन्याएं बनाई गई टुसू मूर्ति की पूजा सेवा–भावना, प्रेम–भावना, शालीनता के साथ करती हैं। पूजा के दौरान लड़कियां टुसू गीत भी गाती हैं। इसमें कुंवारी लड़कियों की मां, चाची, फुआ, मौसी आदि सहयोग करती हैं।

मकर संक्रांति के दिन टुसू पर्व मनाया जाता है। फिर उसके अगले दिन इसे नदी में प्रवाहित किया जाता है। मकर संक्रांति के एक दिन पहले पुरुषों द्वारा बिना बाजी का मुर्गोत्सव मनाया जाता है, जिसे बाउड़ी कहा जाता है। इस उत्सव से लौटने के बाद सारी रात लोग गाते–बजाते हैं। सुबह सभी ग्रामीण मकर स्नान के लिए नदी पहुंचते हैं। स्नान के दौरान गंगा माई का नाम लेकर मिठाई भी बहाते हैं। उत्सव और मेले का आनंद लेने के बाद टुसू का विसर्जन गाजे–बाजे के साथ कर दिया जाता है।

टुसू पर्व को धूमधाम से मनाने के पीछे कई कहानियां प्रचलित हैं। जानकारों के मुताबिक टुसू एक गरीब कुरमी किसान की अत्यंत सुंदर कन्या थी। धीरे–धीरे संपूर्ण राज्य में उसकी सुंदरता का बखान होने लगा। एक क्रूर राजा के दरबार में भी खबर फैल गयी। राजा को लोभ हो गया और कन्या को पाने के लिए उसने षडयंत्र रचना शुरू कर दिया। एक वर्ष राज्य में भीषण अकाल पड़ा। किसान लगान देने की स्थिति में नहीं थे। इस स्थिति का फायदा उठाने के लिए राजा ने कृषि कर दोगुना कर दिया। गरीब किसानों से जबरन कर वसूली का आदेश दे दिया गया। पूरे राज्य में हाहाकार मच गया। टुसू ने किसान समुदाय से एक संगठन खड़ा कर राजा के आदेश का विरोध करने का आह्वान किया।

राजा के सैनिकों और किसानों के बीच भीषण युद्ध हुआ। हजारों किसान मारे गये। टुसू भी सैनिकों की गिरफ्त में आने वाली थी। उसने राजा के आगे घुटने टेकने के बजाय जल–समाधि लेकर शहीद हो जाने का फैसला किया। वह उफनती नदी में कूद गयी। टुसू की इस कुर्बानी की याद में ही टुसू पर्व मनाया जाता है। टुसू की प्रतिमा बनाकर नदी में विसर्जित कर श्रद्धांजलि दी जाती है। टुसू कुंवारी कन्या थी, इसलिए इस पर्व में कुंवारी लड़कियों की ही भूमिका अधिक होती है।

हैल पूंहया : अच्छे भाग्य का प्रतीक

हैल पूंहया त्योहार सर्दियों की गिरावट के साथ शुरू होता है। माघ महीने के पहले दिन को 'आखैई जात्रा' या 'हैल पूंहया' के रूप में जाना जाता है। इसे जुताई की शुरुआत माना जाता है। किसान इस शुभ दिन सुबह अपनी कृषि भूमि पर ढाई चक्कर हल चलाते हैं। इस दिन को अच्छे भाग्य के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।

भोक्ता परब : अंगारों पर चलते हैं भक्त

यह त्योहार बसंत और गर्मियों की अवधि के बीच मनाया जाता है। झारखण्ड के आदिवासी लोगों के बीच भोक्ता परब बुद्धा बाबा की पूजा के रूप में जाना जाता है। लोग दिन में उपवास रखते हैं। पुजारी पहान को उठा कर सरना मंदिर ले जाते हैं। कभी–कभी लाया बुलाये जाने वाले पहान तालाब से बाहर निकलते हैं। सभी भक्त एक–दूसरे के साथ अपनी जांघों को मिलाकर एक श्रृंखला बनाते हैं। अपने नंगे सीने लाया को चलने के लिए पेश करते हैं। शाम को पूजा के बाद भक्त व्यायाम कार्यों और मास्क के साथ बहुत गतिशील और जोरदार छऊ नृत्य में भाग लेते हैं। अगले दिन बहादुरी के आदिम खेल से भरा होता है। भक्त अपने शरीर पर छेद करके हुक लगाते हैं। एक साल के पेड़ से लटके पोल की छोर से खुद को बांध लेते हैं। सबसे अधिक ऊंचाई 40 फीट तक जाती है। रस्सी से जुडे हुए पोल के दूसरे छोर के लोग ध्रुव के आसपास खींच लेते हैं। रस्सी से बंधे भक्त आकाश में अद्भुत नृत्य का प्रदर्शन करते हैं। भक्त दहकते अंगारों पर भी चलते हैं। यह त्योहार झारखण्ड के तमाड़ क्षेत्र में अधिक लोकप्रिय है। हालांकि राज्यों के अन्य क्षेत्रों में भी इसे मनाया जाता है।

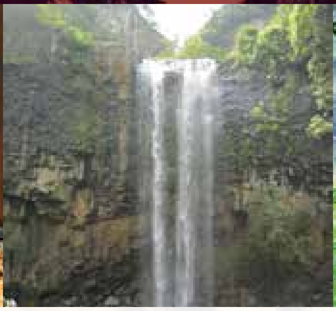

NATURE'S HIDDEN JEWEL

Jharkhand is a State in Eastern India

Jharkhand is a state in eastern India. It was carved out of the southern part of Bihar on 15 November 2000. Jharkhand shares its border with the state of Bihar to the north, Uttar Pradesh and Chhattisgarh to the west, Orrisa to the south, and West Bengal to the east. It has an area of 79,714 km. The industrial city of Ranchi is its capital and Dumka is sub capital while Jamshedpur is the largest and the biggest industrial city of the state.

GOVERNMENT OF JHARKHAND DEPARTMENT OF TOURISM

M.D.I. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi 834004
Secretary Ph. : 0651-2400981, Fax : 0651-2400982, Email : govjharkhandtourism@gmail.com
Director Ph. : 0651-2400493, Fax : 2400492, Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
JTDC Email Id : jtdcltd@gmail.com, Website : www.jharkhandtourism.gov.in
www.facebook.com/jharkhandtourismdepartment, Twitter : https://twitter.com/visitjharkhand,
YouTube : https://m.youtube.com/channel/UCKDHUzseKwkESQLzOliVOA

जानवरों की पूजा है वंदना कार्तिक

वंदना कार्तिक (कार्तिक अमावश्या) के महीने के काले चंद्रमा के दौरान मनाये जाने वाले त्योहारों में से एक है। यह त्योहार मुख्य रूप से जानवरों के लिए है। आदिवासी समुदाय के लोग पालतू जानवरों के बहुत करीब होते हैं। इस त्योहार में लोग अपने गायों और बैलों को नहाते हैं। साफ करते हैं। उन्हें सुंदर गहनों से सजाते हैं। इस त्योहार के गीत को 'ओहिरा' कहा जाता है, जो पशुओं को समर्पित होते हैं। इस त्योहार के पीछे धारणा यह है कि जानवर हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। उनके अंदर भी इंसान जैसी ही आत्मा होती है। वंदना का सबसे रोमांचक दिन इसके सप्ताह का आखिरी दिन होता है। बैल और भैंस को एक मजबूत ध्रुव से बांध कर उनपर एक सूखी पशु हाइड से हमला किया जाता है। इससे जानवरों को गुस्सा आता है। वे अपनी सींगों से लोगों को मारते हैं, जिसका भीड़ आनंद उठाती है। आम तौर पर जानवरों को सजाने के लिए प्राकृतिक रंग का इस्तेमाल किया जाता है।

राह में दिखाई देने वाले किसी भी पालतू या जंगली जानवर, पक्षियों का शिकार करती हैं। ये अनोखा रिवाज झारखण्ड के उरांव आदिवासी समुदाय में मनाया जाता है।

पुरुषों के वेश में महिलाएं करती हैं जनी शिकार

प्रत्येक 12 वर्षों के अंतराल में जनी शिकार मनाया जाता है। एक सप्ताह तक चलने वाले इस पर्व में सिर्फ महिला और युवतियां शामिल होती हैं। वे पुरुष का वेश धारण कर हाथों में परंपरागत हथियार (गुलेल, कुल्हाड़ी, डंडे, तीर–धनुष आदि) लिए शिकार के लिए निकलती हैं। राह में दिखाई देने वाले किसी भी पालतू या जंगली जानवर, पक्षियों का शिकार करती हैं। ये अनोखा रिवाज झारखण्ड के उरांव आदिवासी समुदाय में मनाया जाता है। ग्रामीण आदिवासी क्षेत्रों में मान्यता है कि जनी शिकार के बाद गांव से बुरी आत्माओं का साया दूर चला जाता है। इससे उनके परिजन बीमार दुखी नहीं होते। इस दौरान महिलाएं पुरूषों के पोषाक पहनकर जंगल और सड़कों पर उतरती हैं। बकरा–बकरी, मुर्गे–मुर्गियों समेत कई जानवरों का शिकार करके लौटती हैं। दिनभर के शिकार के बाद शाम को इन्हें पकाया जाता है। रात में इसे खाकर जश्न मनाया जाता है।

इस पर्व को कब से मनाया जा रहा है, इसके बारे में कोई निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं है। किंवदंतियों की मानें, तो मुगल शासन काल के दौरान जब मुगल सेना रोहतासगढ़ की ओर कूच कर रही थी, इसी दौरान उनकी नजर इन उरांव जनजाति पर पड़ी। इन पर कब्जा करने के लिए उन्होंने आदिवासियों पर हमला कर दिया। उस समय गांव के पुरुष सरहुल पर्व मना रहे थे। ऐसे में उरांव स्त्रियों ने रोहतासगढ़ बचाने के लिए मोर्चा संभालते हुए मुगल सेना से लोहा लिया। उन्हें पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। ऐसा उन्होंने 12 वर्षों तक लगातार किया। हालांकि बाद में उन्हें हार माननी पड़ी। इसी याद में इसे हर 12 वर्षों में मनाया जाता है।

सूर्य की उपासना है छठ पर्व

छठ सूर्योपासना का पर्व है। मूलतः सूर्य षष्ठी व्रत होने के कारण इसे छठ कहा गया है। पारिवारिक सुख–समृद्धि और मनोवांछित फल प्राप्ति के लिए यह पर्व मनाया जाता है। स्त्री और पुरुष समान रूप से इस पर्व को मनाते हैं। इस पर्व को जनजातीय समुदाय के लोग भी मनाते हैं। छठ व्रत के संबंध में अनेक कथाएं प्रचलित हैं। एक कथा के अनुसार जब पांडव अपना सारा राजपाट जुए में हार गये, तब श्री कृष्ण द्वारा बताये जाने पर द्रौपदी ने छठ व्रत रखा। उनकी मनोकामनाएं पूरी हुईं। पांडवों को राजपाट वापस मिला। लोक परंपरा के अनुसार सूर्यदेव और छठी मइया का संबंध भाई–बहन का है। लोक मातृका षष्ठी की पहली पूजा सूर्य ने ही की थी। छठ पर्व को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो षष्ठी तिथि (छठ) को एक विशेष खगोलीय परिवर्तन होता है। इस समय सूर्य की पराबैगनी किरणें पृथ्वी की सतह पर सामान्य से अधिक मात्रा में एकत्र हो जाती हैं। इस कारण इसके संभावित कुप्रभावों से मानव को यथासंभव रक्षा करने की ताकत मिलती है। पर्व पालन से सूर्य (तारा) प्रकाश (पराबैगनी किरण) के हानिकारक प्रभाव से जीवों की रक्षा संभव है। पृथ्वी के जीवों को इससे बहुत लाभ मिलता है। सूर्य के प्रकाश के साथ उसकी पराबैगनी किरण भी चंद्रमा और पृथ्वी पर आती है। सूर्य का प्रकाश जब पृथ्वी पर पहुंचता है, तब पहले वायुमंडल मिलता है। वायुमंडल में प्रवेश करने पर उसे आयन मंडल मिलता है। पराबैगनी किरणों का उपयोग कर वायुमंडल अपने ऑक्सीजन तत्व को संश्लेषित कर उसे एलोट्रोप ओजोन में बदल देता है। इस क्रिया द्वारा सूर्य की पराबैगनी किरणों का अधिकांश भाग पृथ्वी के वायुमंडल में ही अवशोषित हो जाता है। पृथ्वी की सतह पर केवल उसका नगण्य भाग ही पहुंच पाता है। सामान्य अवस्था में पृथ्वी की सतह पर पहुंचने वाली पराबैगनी किरण की मात्रा मनुष्यों या जीवों के सहन करने की सीमा में होती है। अतः सामान्य अवस्था में मनुष्यों पर उसका कोई विशेष हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ता, बल्कि उस धूप द्वारा हानिकारक कीटाणु मर जाते हैं। इससे मनुष्य या जीवन को लाभ होता है। छठ जैसी खगोलीय स्थिति (चंद्रमा और पृथ्वी के भ्रमण तलों की सम रेखा के दोनों छोरों पर) सूर्य की पराबैगनी किरणें कुछ चंद्र सतह से परावर्तित और कुछ गोलीय अपवर्तित होती हुई। पृथ्वी पर पुनः सामान्य से अधिक मात्रा में पहुंच जाती हैं। वायुमंडल के स्तरों से आवर्तित होती हुई, सूर्यास्त और सूर्योदय को यह और भी सघन हो जाती हैं। ज्योतिषीय गणना के अनुसार यह घटना कार्तिक और चैत्र मास की अमावस्या के छह दिन बाद आती है। ज्योतिषीय गणना पर आधारित होने के कारण इसका नाम छठ पर्व ही रखा गया है।

एक कथा के अनुसार जब पांडव अपना सारा राजपाट जुए में हार गये, तब श्री कृष्ण द्वारा बताये जाने पर द्रौपदी ने छठ व्रत रखा। उनकी मनोकामनाएं पूरी हुईं।

सोहराय पर होती है गाय-बैल की पूजा

संथाल परगना प्रमंडल सहित पूरे प्रदेश में आदिवासियों के लिए सोहराय पर्व का विशेष महत्व है। सोहराय पर्व को गोधन पूजन पर्व भी माना जाता है। आदिवासियों में सोहराय पर्व की उत्पत्ति की कथा भी काफी रोचक है। जानकारों का कहना है कि जब मंचपुरी अर्थात मृत्युलोक में मानवों की उत्पत्ति होने लगी, तब बच्चों के लिए दूध की जरूरत महसूस होने लगी। उस कालखंड में पशुओं का सृजन स्वर्गलोक में होता था। मानव जाति की इस मांग पर मारांगबुरु अर्थात शिवजी स्वर्ग पहुंचे। अयनी गाय, बयनी गाय, सुगी गाय, सावली गाय, करी गाय, कपिल गाय, वरदा बैल से मृत्युलोक में चलने की अपील की। हालांकि ये नहीं माने, तब शिवजी ने कहा कि मंचपुरी में मानव युगों–युगों तक तुम्हारी पूजा करेगा। तब वे लोग राजी होकर धरती पर आए। उसी गाय–बैल की पूजा के साथ सोहराय पर्व की शुरुआत हुई। पर्व में गाय–बैल की पूजा आदिवासी समाज काफी उत्साह के साथ करता है। यह पर्व छह दिनों तक मनाया जाता है। इसकी धूम पूरे क्षेत्र में देखने को मिलती है। पर्व के पहले दिन गढ़ पूजा पर चावल गुंडी के कई खंड का निर्माण कर पहले खंड में एक अंडा रखा जाता है। गाय–बैलों को इकट्ठा कर छोड़ा जाता है, जो गाय या बैल अंडे को फोड़ता या सूंघता है, उसकी भगवती के नाम पर पहली पूजा की जाती है। उन्हें भाग्यवान माना जाता है। मांदर की थाप पर नृत्य होता है। इसी दिन से बैल गायों के सिंग पर प्रतिदिन तेल लगाया जाता है। दूसरे दिन गोहाल पूजा पर मांझी थान में युवकों द्वारा लठ खेल का प्रदर्शन किया जाता है। रात्रि को गोहाल में पशुधन के नाम पर पूजा की जाती है। खानपान के बाद फिर नृत्य–गीत का दौर चलता है। तीसरे दिन खुंटैव पूजा पर प्रत्येक घर के द्वार पर बैलों को बांधकर पीठा पकवान का माला पहनाया जाता है। ढोल–ढाक बजाते हुए पीठा को छीनने का खेल होता है। चौथे दिन जाली पूजा पर घर–घर चंदा उठाकर प्रधान को दिया जाता है। सोहराय गीतों पर नृत्य–गीत चलता है। पांचवें दिन हांकु काटकम कहलाता है। इस दिन आदिवासी लोग मछली ककड़ी पकड़ते हैं। छठे दिन आदिवासी झुंड में शिकार के लिए निकलते हैं। शिकार में प्राप्त खरगोश, तीतर आदि जन्तुओं को मांझीथान में इकठ्ठा कर घर–घर प्रसाद के रूप में बांटा जाता है। संक्रांति के दिन को बेझा तुय कहा जाता है। इस दिन गांव के बाहर नायकी अर्थात पुजारी सहित अन्य लोग ऐराडम पेड़ को गाड़कर तीर चलाते हैं। सोहराय में गीत नृत्य का अपना एक विशेष महत्व है।

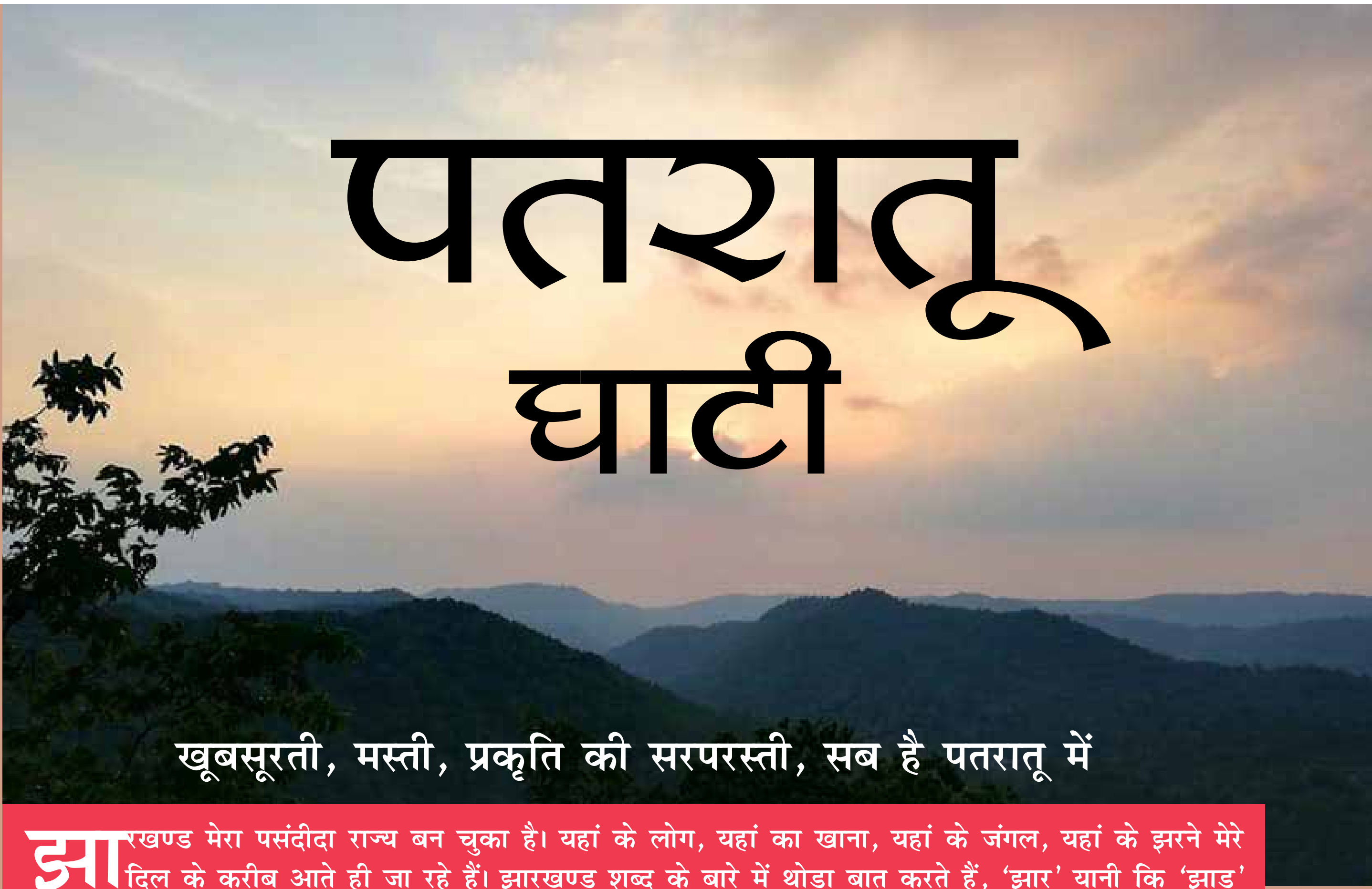

पतरातू घाटी

खूबसूरती, मस्ती, प्रकृति की सरपरस्ती, सब है पतरातू में

झारखण्ड मेरा पसंदीदा राज्य बन चुका है। यहां के लोग, यहां का खाना, यहां के जंगल, यहां के झरने मेरे दिल के करीब आते ही जा रहे हैं। झारखण्ड शब्द के बारे में थोड़ा बात करते हैं, 'झार' यानी कि 'झाड़' जो यहां के जंगलों का प्रतिनिधि करता है और 'खंड' यानी टुकड़ा। जंगलों का एक टुकड़ा यानी अपना प्यारा हरिताभ झारखण्ड। आज मैं झारखण्ड के एक बहुत ही खूबसूरत पिकनिक स्पॉट के बारे में आपको बताने वाली हूं, नाम है पतरातू। ये रांची शहर से तकरीबन चालीस किलोमीटर दूर रामगढ़ जिले में है।

पतरातू घाटी

मैंने अपने कुछ दोस्तों के साथ यहां जाने का प्लान बनाया। एक चार पहिया गाड़ी भी साथ थी। रांची शहर की सड़कों से आगे बढ़ते ही हमें दूर–दूर तक फैले हुए खेत नजर आने लगे। हवा ने अपना रुख ही बदल लिया था, ऐसे मदहोशी से बहे जा रही थी, मानो हमें अपने आगोश में लेकर फिर कभी वहां से जाने ही नहीं देगी। इन कस्बाई रास्तों को भी पार करके हमने पतरातू घाटी में प्रवेश किया। गोल–गोल चिकने रास्तों से होते हुए हम नीचे उतरते जा रहे थे। बादल और सूरज आपस में लुका–छिपी खेल रहे थे। पतरातू घाटी के ये रास्ते ही अपने आप में पूरा का पूरा टूरिस्ट स्पॉट है। लंबे–लंबे पेड़, मटरगश्ती करते लोग, तरह–तरह के चटखारे वाले स्ट्रीट फूड, सेल्फी लेते युवाओं के झुंड, सब कुछ आपका मूड तरोताजा कर देते हैं। पतरातू घाटी का ड्रोन कैमरे से लिया गया वीडियो देखिएगा कभी, इतना अप्रतिम लगेगा कि आप अगली ट्रिप यहीं का प्लान कर लेंगे। अतिरिक्त जानकारी के लिए बता दूं कि नियमित ट्रेनों के माध्यम से देश के अन्य प्रमुख शहरों से पतरातू अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। रामगढ़ बस अड्डे से पतरातू की ओर जाने वाली बस भी आपको आराम से मिल जाएगी। अगर आपको स्टे करना है, तो रामगढ़ कैंट और रांची में कम और मध्यम बजट के होटल उपलब्ध हैं।

पतरातू डैम

तो अब हमने अपनी गाड़ी एक जगह पार्क कर दी। चलते-चलते पतरातू डैम के पास पहुंच गए। आपको बता दें कि इस डैम का निर्माण पतरातू थर्मल पावर स्टेशन को पानी की आपूर्ति के उद्देश्य से किया गया था। नलकारी नदी और इस बांध के आस-पास की पहाड़ियों के झरने से पानी इस बांध में जमा किया जाता है। इसे भारत के महान इंजीनियर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया ने डिजाईन की थी। इस बांध की कुल भंडारण क्षमता 81 वर्ग मील है। यह एक काफी सुंदर जगह है। खास तौर से सर्दियों के मौसम के दौरान यहां अलग ही समां होता है। डैम का चटख नीला पानी बिल्कुल किसी सागर की माफिक दिखता है। खूब सारी मछलियां भी हैं यहां, जिनको हमनें दाना भी खिलाया। इन सबका भी अलग सुख है। आपको ये जानकर हैरानी होगी कि इस बांध के नीचे एक सुरंग भी है, जो पतरातू के दो गांवों लब्गा और हरिहरपुर को जोड़ती है। हालांकि सुरक्षा कारणों से इसे बंद रखा गया है। बांध के बगल में एक सर्किट हाउस है। पास में ही प्राचीन पंचवाहिनी मंदिर है। वहां पर दर्शन कर हम वहां से ऊपर की ओर वापस आने लगे।

दैवीय सनसेट

सूरज अब ढलने को था। आसमान सूरज के बदलते रंगों से रंगीन हो रहा था। इस बदलाव ने एक पल के लिए नई जगह देखने की मेरी चंचलता को शांत कर दिया। मैं चुप सी बैठ गई और पतरातू घाटी में उतरते सूरज के साथ चढ़ रहे जादू में डूब गई। जब वहां से लौट रहे थे, तब तक मुझे रांची और झारखण्ड से काफी स्नेह हो चुका था। मैंने वहां के दोस्तों से एक बात छेड़ी, यार झारखण्ड में पर्यटन को काफी उपेक्षित रखा गया है। मतलब मैं यहां आई हूं, चीजें देख रही हूं तो लग रहा है कि दिल्ली या और किसी जगह पर बैठे लोगों के दिमाग में झारखण्ड की क्या छवि है। असल में झारखण्ड तो बिल्कुल ही अलहदा है। चलो मैं तो घुमक्कड़ हूं, मुझे पॉपुलर चीजों से फर्क नहीं पड़ता, मुझे घूमना है, मैं घूमूंगी, लेकिन आम जनता को आकर्षित करने के लिए झारखण्ड के पास क्या है? जैसे यूपी के पास ताजमहल है, दिल्ली के पास इंडिया गेट, लालकिला है। राजस्थान के पास रजवाड़े-किले हैं। झारखण्ड के पास ऐसा एक क्या है, जो उसे रिप्रजेंट करे। मतलब झारखण्ड के पास इतना कुछ है... इतना... फिर भी लोगों की नजरों में झारखण्ड मतलब उजाड़, बोगस जगह।

परिचय :

मेरा नाम प्रज्ञा श्रीवास्तव है। मैं www-chalatmusaafir-in की फाउंडिंग एडिटर हूं। हमारी वेबसाइट देश की पहली हिंदी ट्रैवेल वेबसाइट है। चलत मुसाफ़िर का एक ही उद्देश्य है, देश भर के घुमक्कड़ एक हों। भारत के बारे में हिंदी में लिखें, ताकि हिंदी में यात्रा साहित्य समृद्ध हो। वेबसाइट के अलावा चलत मुसाफ़िर का अपना यूट्यूब चैनल भी है, जिसमें अलग-अलग राज्यों की अलहदा कहानियां हैं। ट्रैवेल ब्लॉग्स हैं। नवंबर, 2017 में चलत मुसाफ़िर को लॉन्च करने से पहले मैं इंडिया टुडे और नेटवर्क 18 ग्रुप्स में बतौर पत्रकार काम कर चुकी हूं। झारखण्ड मेरा बीसवां राज्य है घुमक्कड़ी के सिलसिले में।

फ्रांस और भारत की संस्कृति का मिश्रण देखने आएं

पांडिचेरी

देश में पर्यटन स्थलों की कमी नहीं है। हर राज्य में घूमने और देखने के लिए आपको बहुत कुछ मिल जाएगा। देश के पूर्वी हिस्से में बसे पांडिचेरी में भी कई पर्यटन स्थल हैं। वहां फ्रेंच सभ्यता की भी झलक मिलती है। वहां के बारे में यह रिपोर्ट प्रस्तुत है।

मीरा शर्मा

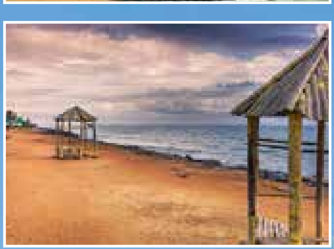

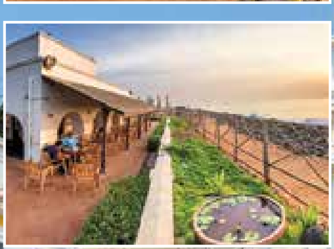

देश के हर राज्य की अपनी विशेषता है। उसकी संस्कृति है। खान–पान और पहनावा है। वहां अन्य जगहों से अलग कई पर्यटन स्थल होते हैं। ऐसे ही देश के पूर्वी हिस्से में बसा है एक राज्य। केंद्र शासित इस प्रदेश का नाम पांडिचेरी है। यहां पर्यटकों को घूमने के लिए काफी कुछ है। ज्यादातर गतिविधियां समुद्री तट के आसपास ही हैं। यहां आप रेत पर पैदल चल सकते हैं। समुद्र में तैर सकते हैं। सूर्यास्त होते देख सकते हैं। रिवर क्रूज में बैठकर आनंद उठा सकते हैं। इच्छा होने पर चुनांबर नदी में बोटिंग कर सकते हैं। वहां की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद ले सकते हैं। कई बार समुद्र में डॉलफिन खेलती दिख जाएंगी। फ्रेंच क्वार्टर्स और चौड़ी सड़कों पर पुरानी इमारतों के ईर्द–गिर्द पैदल भी घूम सकते हैं। समुद्र के नजारे देखते हुए फ्रेंच उच्चायोग के आसपास के दृश्यों को निहार सकते हैं। दक्षिण में जाने पर पुराने पांडिचेरी में गुजरे जमाने की यादें ताजा हो जाएंगी।

यह है घूमने लायक जगहें :

- म्यूजियम
- समुद्री तट
- मंदिर
- फ्रेंच फोर्ट लुइस
- आयी मंडपम
- अरबिंदो आश्रम
- बैक वाटर लेक्स और गार्डन
- 19वीं सदी का लाइट हाउस
- गवर्नमेंट पार्क
- डुप्लीक्स की प्रतिमा
- फ्रेंच वार मेमोरियल

पांडिचेरी की पहचान देश के अन्य पर्यटन केंद्रों से अलग है। यहां तीन सौ साल से ज्यादा समय तक फ्रेंच शासन रहा। इसके कारण आज भी उसका प्रभाव दिखता है। फ्रेंच लोगों ने कई इमारतें बनाई हैं। ये इमारतें फ्रांस की वास्तुकला के बेहतरीन नमूना पेश करती हैं। इस शहर में फ्रांस और भारत की संस्कृतियों का अदभुत मिश्रण देखने को मिलता है। यहां आने वाले पर्यटकों के लिए रोमांचित और मोहित करने वाली जगह बनाते हैं।

फ्रेंच फोर्ट लुइस

फ्रेंच फोर्ट लुइस इतिहास में रुचि रखने वालों और शहर आने वाले पर्यटकों में काफी लोकप्रिय है। यह फ्रेंच शासन में बने शुरुआती दफ्तरों में से एक था। जानकारों के मुताबिक फ्रेंच फोर्ट लुइस का निर्माण वर्ष 1709 के आसपास हुआ था। यह फ्रेंच फोर्ट के मॉडल पर बना था, जिसे फ्रेंच बोलने वाले बेल्जियम में टूर्नाई के वौबन ने बनाया था। फ्रेंच फोर्ट लुइस का निर्माण पंचकोण आकार में किया गया है। इसमें पांच छावनियां और कुछ दरवाजे हैं। फ्रेंच फोर्ट लुइस का रोमांचक और आकर्षक हिस्सा उसमें बने अंडरग्राउंड चैंबर हैं। यह चैंबर हथियार, गोला–बारूद और अन्य वस्तुओं को सुरक्षित रखने के लिए बनाए गए थे। फ्रेंच फोर्ट लुइस की सीमा पर खाई बनी है। फ्रेंच फोर्ट लुइस ने 50 साल से ज्यादा समय तक शहर के गढ़ के तौर पर काम किया है। कई हमलों और आपदाओं का सामना भी किया।

आयी मंडपम

गवर्नमेंट पार्क शहर के बड़े पर्यटन केंद्रों में से एक है। खूबसूरत बगीचे के दिल में आयी मंडपम स्थित है। यह शहर के आकर्षक स्मारकों में एक है। इतिहासकारों के अनुसार इसका निर्माण 16वीं सदी में हुआ था। नामकरण महिला

गणिका आयी पर रखा गया था। कहा जाता है कि आयी ने शहर में पानी की आपूर्ति के लिए जलाशय बनवाने के लिए अपना घर तक तुड़वा दिया था। उस समय नेपोलियन तृतीय फ्रांस के शासक थे। बाद में फ्रेंच सरकार ने शहर के विकास में दिए योगदान की याद में इस जगह को आयी के नाम से जोड़ दिया। आयी मंडपम स्मारक को वास्तुकला की ग्रीको–रोमन शैली के मुताबिक बनवाया गया है। वास्तुकला के इस अनुपम और खूबसूरत नमूने की मौजूदगी से पार्क आने वाले पर्यटक उत्साहित हो जाते हैं। शाम में आयी मंडपम जगमगाहट से और भी खूबसूरत दिखता है।

आनंद रंगा पिल्लई म्यूजियम

आनंद रंगा पिल्लई म्यूजियम की प्रसिद्धि की एक बड़ी वजह भारतीय उपमहाद्वीप में फ्रांस के अधिपत्य वाले इलाकों के पूर्व गवर्नर जनरल फ्रेंकोइज डुप्लीक्स का प्रसिद्ध दुबाश है। पूर्व गवर्नर के स्वर्णिम दिनों में पांडिचेरी के पश्चिमी हिस्से में बना यह स्मारक 'नैटिव क्वार्टर्स' के नाम से पहचाना जाता था। यह समकालीन फ्रेंच और भारतीय वास्तुशिल्प का बेहतरीन मिश्रण पेश करता है। आज भी इसके जरिए यहां आने वाले पर्यटक इतिहास की सैर पर निकल पड़ते हैं। 18वीं सदी के फ्रेंच भारत के बारे में सूचनाएं हासिल करने का बहुत बड़ा स्रोत पिल्लई की डायरियां हैं। उनके भवन का निर्माण 1738 के आसपास हुआ था। यह पश्चिमी हिस्से पर स्थित सबसे पुरानी इमारतों में से एक है।

अरबिंदो आश्रम

महान देशभक्त, राष्ट्रवादी, दार्शनिक, अध्यात्मिक नेता और गुरु श्री अरबिंदो घोष ने ज्ञान हासिल करने के लिए कई साल पांडिचेरी में बिताए। अरबिंदो आश्रम का निर्माण उन्होंने ही करवाया। यहां हर साल लाखों की संख्या में उनके भक्त और अनुयायी आते हैं। आश्रम ने एक तीर्थस्थल का दर्जा हासिल कर लिया है। यह पांडिचेरी के प्रमुख पर्यटक स्थलों में एक है। अरबिंदो आश्रम सबसे ज्यादा देखे जाने वाले पर्यटन स्थल के तौर पर विकसित हुआ है। पांडिचेरी 'मां' और श्री अरबिंदो का यह घर 1926 में बनाया गया। आश्रम की मुख्य इमारत हरे पेड़ों की कोटरी में बने आंगन के बगल में है। खूबसूरत फूलों का बगीचा इस जगह की खूबसूरती और बढ़ाता है। इसके बीच में ही समाधि स्थल है। आम तौर पर शांत रहने वाला पांडिचेरी का अरबिंदो आश्रम त्योहारों में सजीव हो उठता है। हजारों की संख्या में पर्यटक, अनुयायी और यात्री इसे देखने पहुंचते हैं।

झील और बगीचे

यहां के झील और बगीचे पर्यटकों को काफी आकर्षित करते हैं। बॉटेनीकल गार्डन, भारती पार्क, चूनांबर बैकवाटर और कीजूर भी इनमें शामिल हैं। नए बस स्टैंड के दक्षिणी हिस्से में बॉटेनीकल गार्डन है। यह अपने रंग–बिरंगे फूल, पत्थरों और बजरी के साथ ही अनदेखे पेड़ों की वजह से लोकप्रिय है। संगीतमय फव्वारा बच्चे और युवाओं की पहली पसंद है। भारती पार्क हरियाली के अपने लंबे पैच के कारण पांडिचेरी शहर के लिए फेफड़ों के तौर पर काम करता है। कृत्रिम पहाड़, कई पेड़, तालाब और ग्रेनाइट की बेंच से सजा यह बगीचा इसी वजह से पर्यटकों को आकर्षित करता है।

कीजूर एक गांव है। यहां चार सौ साल पुराने बरगद के पेड़ हैं। पांडिचेरी के लोकप्रिय क्षेत्रों में एक चूनांबर बैकवाटर मुख्य शहर से करीब है। चूनांबर बैकवाटर में नौका–विहार और धूप का आनंद आदि गतिविधियों में भाग लिया जा सकता है। यहां वॉलीबॉल, समुद्री तट पर घुड़सवारी और कई अन्य खेल होते हैं। खेलप्रेमी इनका आनंद उठाते हैं। यहां हैरतअंगेज करतबों से मंत्रमुग्ध करने वाली डॉलफिन मछलियों को भी देख सकते हैं।

19वीं सदी का लाइट हाउस

गोरिमेडू के रेड हिल्स पर बना यह लाइट हाउस आज भी खूबसूरती से खड़ा है। पर्यटक यहां बार–बार जाना पसंद करते हैं। शहर की पश्चिमी सीमा से करीब पांच किलोमीटर दूर स्थित 19वीं सदी का यह लाइटहाउस प्रमुख आकर्षण केंद्रों में एक है।

अरियानकुप्पम आर्कियोलॉजिकल साइट

अरियानकुप्पम आर्कियोलॉजिकल साइट इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। महान खगोलविद गुइलुमे ली गेंटिल इस तटीय केंद्रशासित प्रदेश अक्सर आते थे। खासकर 1768 से 1771 की अवधि में। अपनी यात्राओं में उन्हें अरियानकुप्पम में जीर्ण–शीर्ण दीवारें, ईटों के सांचे और टूटे–फूटे जर्जर स्थिति में प्राचीन कुएं मिले। यह जगह पांडिचेरी से चार किलोमीटर दूर है। अरियानकुप्पम पुरातत्व स्थल पर खुदाई का काम साल 1940 में हुआ था। इस स्थल के उत्तरी हिस्से की खुदाई से ईटों से बने गोदाम के खंडहर मिले थे। दक्षिणी हिस्से से कुछ प्राचीन आंगन, जिनमें बड़े टैंक और पानी की निकासी की माकूल व्यवस्था थी। मिट्टी के बर्तन और अन्य कृतियां भारतीय दिख रही हैं, जबकि उनमें से कुछ भूमध्यसागरीय संस्कृति के सूचक हैं। मोती, कम कीमती नग और प्राचीन रोमन कलाकृतियां भी बरामद हुईं। इनमें शराब और चटनियों के जार, जो एक खास जमाने की चुगली करते दिखते हैं। यह निशान किसी जमाने में सुंदरता के लिए इस्तेमाल होते थे। यह बड़ी संख्या में मिले हैं।

गवर्नमेंट पार्क

गवर्नमेंट पार्क भी फ्रेंच वास्तुकला की खूबसूरती को दिखाता है। यह पार्क अद्भुत और सुंदर मनोरंजन पार्क का एक बेहतरीन उदाहरण है। यहां आराम की तलाश में सैकड़ों पर्यटक पहुंचते हैं। सुकून के कुछ पल बिताते हैं। गवर्नमेंट पार्क पुराने शहर के मध्य क्षेत्र में स्थित है। इस अनूठे बगीचे की खासियत यह है कि इसके आसपास प्रतिष्ठित सरकारी भवन हैं। इनमें लेफ्टिनेंट गवर्नर का पैलेस, विधानसभा, सरकारी अस्पताल, आश्रम का डाइनिंग रूम, सर्कल डी पांडिचेरी प्राइवेट क्लब और पुराना होटल क्वालाइट है।

फ्रेंच युद्ध स्मारक

पांडिचेरी का फ्रांस से गहरा रिश्ता रहा है। इस बात का सबूत फ्रेंच युद्ध स्मारक है। प्रथम विश्वयुद्ध में फ्रांस के लिए अपने जीवन का बलिदान देने वाले बहादुर सैनिकों की याद में गोबर्ट एवेन्यू स्थित फ्रेंच युद्ध स्मारक बनाया गया था। फ्रेंच युद्ध स्मारक और पांडिचेरी पर्यटन का सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है कि 14 जुलाई को बैस्टाइल डे मनाया जाता है। इस दिन स्मारक अधिक सजा–धजा और खूबसूरत दिखाई देता है। समारोह की धूमधाम और भव्यता पर्यटकों में देशभक्ति की भावना जगाती है। साथ ही, उन्हें पुरानी यादों की सैर भी कराती है।

डुप्लीक्स की प्रतिमा

यह सर्वविदित है कि पांडिचेरी किसी जमाने में फ्रेंच बस्ती हुआ करता था। उसका इतिहास हमेशा इसके साथ रहेगा। डुप्लीक्स की प्रतिमा भी केंद्रशासित प्रदेश के फ्रेंच कनेक्शन को दर्शाती है। महान फ्रेंकोइज डुप्लीक्स की प्रसिद्धि की कोई एक वजह नहीं है। कई हैं। भारत में फ्रेंच बस्तियों के पूर्व गवर्नर जनरल रॉबर्ट क्लाइव घोर विरोधी थे। उन्होंने बंगाल के विभाजन में मुख्य भूमिका निभाई थी। सफलता और प्रसिद्धि के चरम पर वह अपना करियर खत्म करने के काफी वर्ष बाद 1780 में पहुंचे। उस समय उनकी अथक सेवाओं के लिए फ्रांस और पांडिचेरी में दो प्रतिमाओं को स्थापित किया गया। इसकी ऊंचाई करीब 2.88 मीटर है। वह भी करीब आधा दर्जन, बड़े, भव्य और सुसज्जित पिलर पर खड़ी हैं। शुरुआत में डुप्लीक्स की प्रतिमा पांडिचेरी में प्लेस ड्यू रिपब्लिक नामक जगह पर लगी थी। वहां से इसे मौजूदा स्थान पर लाया गया है। आज यह जहां है, वह बेहद खूबसूरत जगह है। प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण। पृष्ठभूमि में एक खूबसूरत और रंग–बिरंगा बगीचा है। यह पार्क लंबे और सलीके से बनाए गए मुख्य मार्ग के दक्षिणी छोर पर स्थित है। इसे गोबर्ट एवेन्यू के नाम से जाना जाता है।

जोन ऑफ आर्क की प्रतिमा

जोन आर्क की मूर्ति केंद्र शासित प्रदेश की राजधानी में है। इसमें महान फ्रेंच महिला जोन आर्क को प्रदर्शित किया गया है। आर्क जोन अपनी वीरता और साहस के लिए याद की जाती हैं। अंग्रेजों के चंगुल से देश को आजाद कराने के लिए उन्होंने पूरी ताकत से जवाब दिया। लीक से हटकर चलने वाली क्रांतिकारी आर्क जोन के साहस और आत्मविश्वास ने उस समय भी उनका साथ नहीं छोड़ा था, जब वह युद्ध क्षेत्र में लड़ते–लड़ते गंभीर रूप से घायल हो गई थीं। कॉम्पीन में युद्ध के बाद उन्हें आत्मसमर्पण करना पड़ा था। साजिश और षडयंत्रों से भरे मुकदमे में आर्क जोन को अपवित्रता और विरोधी मत का दोषी ठहराया गया। तत्कालीन पोप ने बाद में यह फैसला पलटा। उनकी बेगुनाही और नेकनीयती साबित हो गई। 24 साल बाद वह शहीद होकर कई लोगों के लिए लीक से हटकर चलने की प्रेरणा बन गईं। आखिरकार 1909 में उन्हें धन्य घोषित किया गया। संत का दर्जा दिया गया।

अलग इतिहास है

पांडिचेरी का एक समृद्ध इतिहास है। दंतकथा है कि प्राचीन काल में ऋषि अगस्त यही रहा करते थे। इन मिथकों के अलावा प्राचीन किले और चोला सिक्कों की खोज इस इलाके की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा को साबित करती है। वर्ष 1673 में फ्रेंच लोगों के आने की शुरुआत हुई। यह 1954 में भारतीय संघ का हिस्सा बना।

ऐसे पहुंचे यहां

यहां पहुंचने के लिए हवाई, रेल और सड़क तीनों मार्गों का उपयोग कर सकते हैं। पांडिचेरी का अपना एयरपोर्ट है। यह लॉसपेट में स्थित है। पांडिचेरी का रेलवे स्टेशन ब्रॉड गेज रेलवे लाइन के जरिए विलापुरम और चेन्नई में फाइव–वे जंक्शन से जुड़ा है। राष्ट्रीय राजमार्ग और राज्य राजमार्गों से राज्य अच्छे से जुड़ा है। यहां होटलों की कोई कमी नहीं है। बजट के मुताबिक विकल्पों का चुनाव कर सकते हैं। यहां खरीदारी का अपना आनंद है। कीमतें अपेक्षाकृत कम होती हैं। यहां फ्रेंच और तमिल पकवानों का मिश्रण मिलेगा। पकवान में बहुत कम मसालों का इस्तेमाल होता है।

रामचंद्र उरांव

मड़ुआ केक

सर्दियों का मौसम झारखण्ड में बड़ा सुहाना होता है। चाहे कड़ाके वाली ठंड में पिकनिक हो या क्रिसमस का त्योहार, हर जगह एक खुशी का माहौल होता है। सबसे ज्यादा लुभावना होता है इस मौसम का खान–पान। क्रिश्चियन धर्म के झारखण्ड आने के बाद विदेशी पाक पकवानों का यहां के व्यंजनों पर खासा असर पड़ा। यहां के लोगों ने पश्चिमी केक पेस्ट्री को अपना स्वरूप दिया।

इन्हीं स्वरूपों में से एक व्यंजन है मड़ुआ का केक। दिखने में तो यह एक आम केक के जैसा होता जरूर है, पर इसमें यहां के स्वाद का जादू है।

रेडीसन ब्लू के मुख्य शेफ, रामचंद्र उरांव ने हमारे साथ मड़ुआ केक की पद्धति को साझा किया। आइये आज मड़ुआ केक बनाना सीखें :

पद्धति

1. एक कटोरी में कैस्टर चीनी और अंडों को नरम होने तक मिलाएं।
2. सारी सूखी सामग्री (मड़ुआ आटा, वनीला एसेंस और केक जेल) को साथ मिला लें।
3. इस सूखे मिश्रण को अंडे वाले मिश्रण में मिलाएं।
4. एक बड़े चम्मच से इस नए मिश्रण को धीरे–धीरे नरम होने तक मिलाएं।
5. केक को बटर पेपर से घेर लें।
6. अब ओवन को 180 डिग्री पर सेट करके मिश्रण को 35 मिनट तक बेक कर लें।
7. केक को निकाल कर ठंडा होने दें और ट्रफल बना लें।

ट्रफल की पद्धति

1. एक सॉस पैन में क्रीम और दूध को गरम कर लें।
2. इसमें डार्क चॉकलेट धीरे–धीरे मिलाएं और नरम होने तक चलाएं।
3. इस मिश्रण को ठंडा होने दें।
4. ठंडा होने पर ये ट्रफल तैयार हो जाएगा।
5. केक को काट कर इस मिश्रण से लेयर कर लें। अपने परिवार और मेहमानों को चखाएं।

सामग्री	माप
केक के लिए	
अंडे	4
कैस्टर चीनी	120 ग्राम
मड़ुआ आटा	120 ग्राम
वनीला एसेंस	5 ग्राम
केक जेल	10 ग्राम
ट्रफल	
क्रीम (अमूल)	75 ग्राम
दूध	75 ग्राम
चॉकलेट	300 ग्राम

DESTINATION

JHARKHAND

सोशल मीडिया में झारखण्ड पर्यटन

Tweets Tweets & replies Media

Raghubar Das · 04 Dec 18

अधिकारी ये सुनिश्चित करें कि मड हाउस का निर्माण अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर हो। यहां आने वाले पर्यटक ग्रामीण परिवेश का आनंद उठा सकेंगे। हर साल मार्च में दुमका में मड फेस्टिवल का आयोजन किया जाएगा। साथ ही मसानजोर को अंतर्राष्ट्रीय स्तर के टूरिस्ट स्थल के तौर पर विकसित किया जाएगा।

Tweets Tweets & replies Media

Amar Kumar B... · 23 Nov 18

लुगुबुरु घंटाबाड़ी धोरोम गाढ़ एक ऐसा स्थल है जिसे विश्व धरोहर में शामिल करने का प्रयास राज्य सरकार कर रही है। लोक आस्था के इस पवित्र स्थल को एक अलग पहचान देने हेतु सरकार आपके साथ खड़ी है। @dasraghubar

2 5 32

Tweets Tweets & replies Media

Jharkhand Tourism Retweeted

CMO Jharkh... · 24 Nov 18

#IFFI इस वर्ष झारखण्ड को फोकस राज्य के रूप में प्रमोट कर रहा है। इससे लोग झारखण्ड की कला-संस्कृति के बारे में जान सकेंगे। झारखण्ड की फिल्म पॉलिसी के बारे में लोगों को बताया जा रहा है जिससे फिल्मकार और फिल्म उद्योग से जुड़े लोग झारखण्ड की ओर आकर्षित होंगे। -श्रीमती मृदुला सिन्हा

6 10

Tweets Tweets & replies Media

Jharkhand Tourism Retweeted

IPRD Ranchi @... · 22 Nov 18

नई दिल्ली: झारखण्ड दिवस में दिखी राज्य की पारम्परिकता और संस्कृति की झलक prdjharkhand.in/view_press_rel...

5 5

Tweets Tweets & replies Media

Jharkhand Tourism Retweeted

Raghubar Das · 04 Dec 18

दुमका के मसानजोर में टूरिस्ट कॉम्पलेक्स का उद्घाटन किया। मसानजोर की प्राकृतिक सुंदरता बेहद मनोरम है, हमने यहां आने वाले पर्यटकों के लिए सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं। मसानजोर आकर बोटिंग का आनंद जरूर उठाएं। #NewJharkhand

Tweets Tweets & replies Media

Jharkhand Tourism Retweeted

Jharkhandforest · 21 Nov 18

एक ही परिसर में पहाड़, झरना, वन, प्राकृतिक परिवेश, अनेक वनस्पतियों, औषधियों और पुष्पी पौधों का समाहार देखना हो, तो वो जगह है रांची के लालखटंगा स्थित जैव विविधता उद्यान, जहां संरक्षित जलीय पुष्पों में बेहद खास है नीलकमल। #Jharkhand @dasraghubar

Tweets Tweets & replies Media

Jharkhand Tourism Retweeted

Raghubar Das · 28 Sep 18

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी द्वारा शुरू की गए #SwachhBharat मिशन के तहत देश के 30 स्वच्छ आईकॉनिक प्लेस का चयन किया गया है। बाबा बैद्यनाथ मंदिर, देवघर को देश के स्वच्छ आईकॉनिक प्लेस में तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है।

14 89 302

Tweets Tweets & replies Media

District Admini... · 22 Nov 18

मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना 2018 अंतर्गत जामताड़ा जिला से लुगू बुरु लालपनिया बोकारो तीर्थ स्थल दर्शन हेतु तीर्थ यात्रियों को जिला प्रशासन द्वारा प्रस्थान करवाया गया। @VisitJharkhand @dasraghubar @cmojhr @prdjharkhand @RDD_Jharkhand

Home Posts Reviews Videos Pho

Jharkhand Tourism

Aug 18 at 12:27am

Dasham Fall, Ranchi
Credit - **Nayan Shaurya Photography**

See Translation

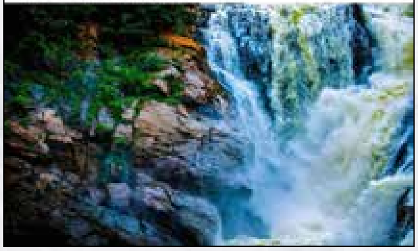

ome Posts Reviews Videos P
Jharkhand Tourism
Aug 12 at 8:31am
ic Credit - @nayanshaurya
omewhere Between Padma to
ajaribagh , Jharkhand
ee Translation

weets Tweets & replies Media
Jharkhand Tourism Retweeted
DPRO, East Singh... · 24 Aug
#विरासतपूर्वीसिंहभूम
"ढाल विद्रोह" के गौरवशाली इतिहास
का साक्षी धालभूम रियासत के
नरसिंहगढ़ का राजबाड़ी स्थल। यहाँ का
सुंदर शांत वातावरण वास्तु शिल्प कला
तथा भक्ति का अनूठा संगम है
@DSinghbhum @cmojhr
@dasraghubar
@VisitJharkhand @tourismgoi

weets Tweets & replies Media
Manish Kumar @... · 06 Sep
Jharkhand in Monsoon :The
beauty that is Patratu Valley!
travelwithmanish.com/
2018/09/in-pic... #jharkhand
#ranchi #PatratuValley
#naturephotography
#monsoon
Ranchi Jharkhand and 2 othe
1 16 47

Tweets Tweets & replies Media
DC Ramgarh @DC... · 09 Sep
The phase 1 projects of
Rajrappa really picked up pace
in last two years & we are
nearing completion. Regular
visits of @dasraghubar has
materialised into aspirations of
developing the siddi peeth of
#MaaChinnamasta into a
global tourism hub.
@teamjharkhand @jayantsinha
@cmojhr

Tweets Tweets & replies Media
DC Deoghar @DC... · 08 Sep
#भादोमेला में भी देवतुल्य श्रद्धालुओं का
बैद्यनाथ धाम आना अनवरत जारी है।
आगंतुक श्रद्धालुओं को सुगम जलार्पण
कराया जा सके। इस हेतु जिला प्रशासन
द्वारा हर संभव सुविधा श्रद्धालुओं को
उपलब्ध कराई जा रही हैं।
#भादोमेला2018
@PMOIndia @dasraghubar
@cmojhr @ajaynathjhaprd
#VisitDeoghar

Tweets Tweets & replies Media
DC East Singhbhum · 14 Sep
On a 4 day visit to 2018
Gunsan Time Travel Festival..to
discuss ways to promote
friendly cooperation and
exchanges between two
cities..Jamshedpur and
Gunsan City
@cmojhr @PMOIndia
1 11 38
Jharkhand Tourism Retweeted

weets Tweets & replies Media
Jharkhand Tourism .. 15 Sep
Introduces Swiss Cottage Tent
in Netarhat, celebrate your
holidays and share your
experience....
@VisitJharkhand @tourismgoi
@incredibleindia
@dasraghubar @cmojhr
@ColorsBangla
3 23 85

weets Tweets & replies Media
Jharkhand Tourism Retweeted
Amar Kumar Bauri ... · 18 Sep
आओ देखें अपना देश। 1अक्टूबर से
शरद महोत्सव का आयोजन पहाड़ों की
रानी "नेतरहाट" में होगा। आप सभी इस
उत्सव में आमंत्रित हैं। टेंट सिटी में
पर्यटकों के रहने की व्यवस्था की जा रही
है। सुंदर वादियों में पर्यटक झारखण्ड की
कला संस्कृति से रूबरू होंगे और यहां के
व्यंजनों का स्वाद भी लेंगे
7 7 69

weets Tweets & replies Media
Jharkhand Tourism Retweeted
DC Deoghar @DC... · 20 Sep
आप सभी को प्रकृति पर्व करमा पूजा की
हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। प्रकृति
के संरक्षक बने और सभी के सहयोग से
देवघर को और हरा भरा बनाये।
@PMOIndia @dasraghubar
@cmojhr @ajaynathjhaprd
@VisitJharkhand
#VisitDeoghar
#CleanDeogharGreenDeoghar

weets Tweets & replies Media
DC Deoghar @DC... · 22 Sep
देवघर के पर्यटक स्थल त्रिकुट पहाड़ पर
आज दिनांक- 22.09.2018 को पर्यटन
पर्व का आयोजन किया जा रहा है।
आप सभी देवघरवासी कार्यक्रम में बढ़-
चढ़ कर हिस्सा लें और पर्यटन पर्व को
सफल बनायें।
#VisitDeoghar
#CleanDeogharGreenDeoghar
@PMOIndia @dasraghubar
@cmojhr @VisitJharkhand
पर्यटन पर्व

jharkhand tourism
Nature's hidden jewel

Jharkhand Tourism Development Corporation
JTDC

JHARKHAND - A NEW EXPERIENCE

Nature's HIDDEN JEWEL

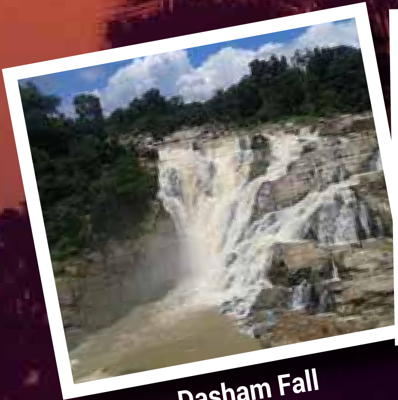
Dasham Fall

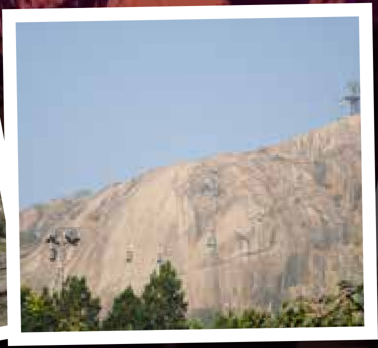
Trikut Pahar

Betla National Park

GOVERNMENT OF JHARKHAND DEPARTMENT OF TOURISM
M.D.I. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi 834004
Secretary Ph. : 0651-2400981, Fax : 0651-2400982, Email : govjharkhandtourism@gmail.com
Director Ph. : 0651-2400493, Fax : 2400492, Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
JTDC Email Id : jtdcltd@gmail.com, Website : www.jharkhandtourism.gov.in
www.facebook.com/jharkhandtourismdepartment, Twitter : https://twitter.com/visitjharkhand,
YouTube : https://m.youtube.com/channel/UCKDHUzseKwkESQLzOliVOA

jharkhand tourism
Nature's hidden jewel

Jharkhand Tourism Development Corporation
JTDC

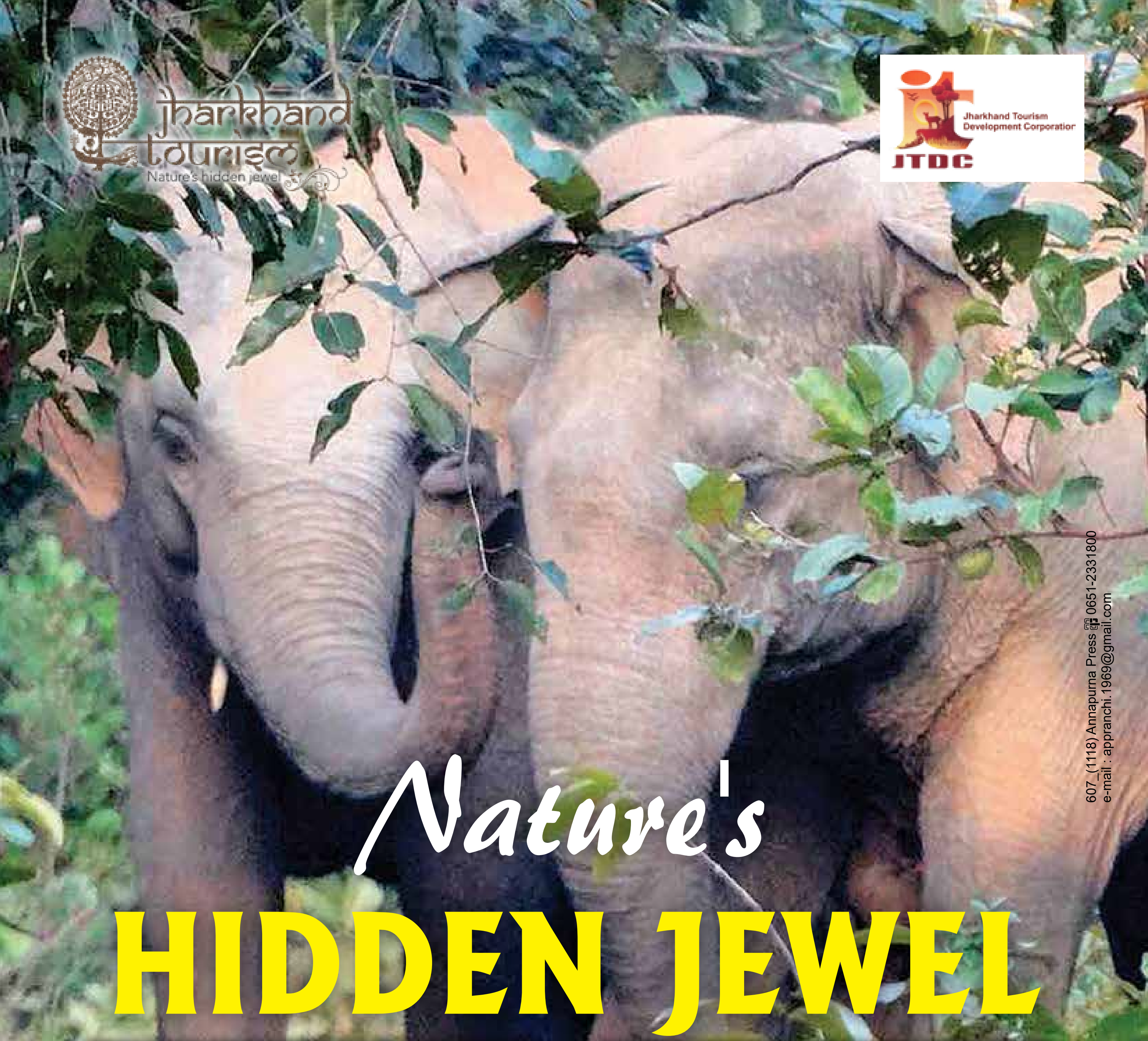

Nature's
HIDDEN JEWEL

GOVERNMENT OF JHARKHAND DEPARTMENT OF TOURISM
M.D.I. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi 834004
Secretary Ph. : 0651-2400981, Fax : 0651-2400982, Email : govjharkhandtourism@gmail.com
Director Ph. : 0651-2400493, Fax : 2400492, Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
JTDC Email Id : jtdcltd@gmail.com, Website : www.jharkhandtourism.gov.in
www.facebook.com/jharkhandtourismdepartment, Twitter : https://twitter.com/visitjharkhand,
YouTube : https://m.youtube.com/channel/UCKDHUzseKwkESQLzOliVOA

607_(1118) Annapurna Press 0651-2331800
e-mail : appranchi.1969@gmail.com